International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"संत मीरा के काव्य में स्त्री विमर्श"

प्रा. डॉ.कल्पना सतीश कावळे
हिन्दी विभाग प्रमुख,
एफ.ई.एस. गॅर्ल्स कॉलेज,
चंद्रपूर

वर्तमान समय में स्त्री–विमर्श चिंतन के केन्द्र में है। शिक्षा दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र, साहित्य, दर्शन, मानसशास्त्र सभी स्त्री को पुन: परिभाि ात करने में लगे हैं।

एक स्त्री द्वारा स्त्री अस्मिता की, उसकी दृि ट, सोच मनस्थिति एवं समस्याओं की गहन खोज और विश्ले ाण है नारी विमर्श। आज आधुनिक नारी समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सफलता एवं काबिलियत के परचम लहरा रही है किन्तु अभी भी बहुत से आंतरिक अवगुण्ठन खुले नहीं है।

स्त्री विमर्श के प्रवाह में कवयित्री संत मीरा का स्त्री विमर्श पर चर्चा करते समय प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या ५०० व ा पहले जन्मी भक्ति आंदोलन की कवयित्री संत मीरा आधुनिक स्त्री विमर्श का अंग हो सकता है ?

निसंदेह ५०० व ा पूर्व जन्मी मीरा हमारी समकालीन नहीं है किंतु ५०० व ा पूर्व जहाँ एक स्त्री को परिवार के समाज के विरूध्द कुछ कहने, सुनाने की आजादी तक नहीं थी उस मूक–स्त्री–समाज में मीरा ने अपने समय की सशक्त सामंती समाज व्यवस्था की कठोर हटबंदियाँ को तोड़ अपने कृ ण प्रेम की प्यास को जिस निर्भयता एवं साहस से व्यक्त किया है, वह स्त्री विमर्श की सक्षम दावेदार सिद्ध होती है।

भक्त मीरा का काव्य केवल भक्तिकाव्य की अभिव्यक्ति नहीं है। मीरा के काव्य में भक्ति की गहनता के साथ ही सत्कालीन दमनकारी सामंती व्यवस्था में घिरी एक स्वतंत्रचेता नारी के प्रतिरोध के तीखे स्वर हरकदम पर विद्यमान है।

मीरा किशोरावस्था से ही एक परम स्वतंत्र, निर्भय और विद्रोही व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। मीरा आद्यान्त कृ णमयी है। कृ ण भक्ति ही मीरा का विश्व एवं जीवनाधार है। मीरा के जीवन–रगरग में कृ णभक्ति समाई है। मीरा की रचना का केन्द्र भी कृ णभक्ति है किन्तु मीरा जितनी अधिक आध्यात्मिक है, उतनी ही अधिक अपने भीतर की नारी के प्रति सचेत और संवदेनशील है। एक भावविभोर भक्त को अपनी भगवद्भक्ति से अधिक आध्यात्मिक है, उतनी ही अधिक अपने भीतर की नारी के प्रति सचेत और संवेदनशील है। मीरा ने भक्ति के साथ साथ अपने समय के हर चुभती रूढ़ि–परम्परा और अन्यायी व्यवस्था के खिलाफ प्रश्न उठाये हैं। पुरू ा प्रधान सामंती राजसत्ता को सीधी चुनौती दी है, जो एक अकेली नारी के लिए आसान काम नहीं था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपने जीवनकाल की बाल्यावस्था से ही मीरा के निर्णय दृढ़ और अटल थे। भक्ति के बीज बचपन से ही मीरा में रूढ़ और अटल थे। भक्ति के बीज बचपन से ही मीरा में रूढ़ थे। मीरा उस सामंती व्यवस्था से है जहॉ पर्दाप्रथा, बाल–विवाह, बहुपत्नी विवाह, सतीप्रथा, जौहर, वैधव्य जैसे अभिशाप कुल की प्रति ठा एवं मान मर्यादा के रूप में दृढ़ता से स्थापित थे। एक नागरिक के रूप में स्त्रियों को कोई अधिकार नहीं थे। स्त्रियाँ इस व्यवस्था की वाहिका बनकर ही मात्र जी सकती थी। परंतु मीरा का स्वतंत्र मन इन बंधनों को स्वीकार नहीं करता। एक किशोरी का कृ ण मूर्ति पर रीझना, उसे पाने का हठ और उसे ही अपना पति मानकर सर्वस्व समर्पित कर देना, मीरा की दृढ़ता और अटल निर्णयक्षमता के प्रतीक है।

मीरा अलौकिक कृ ण को ही अपना स्वामी, पति, प्रियतम मानती है। विवाह के प्रश्न पर किशोरी मीरा बार बार अपनी माँ से कहती है कि, "माई री मैं सुपणा मे याम वरणो", "मै तो सॉवरे के रंग राती" इतनाही नहीं वह सीधे ाब्दों में प्रतिकार करती है कि –

"मेरा तो गिरधर गोपाल दुसरों न कोई
जाके सर मोर मुकुट मेरो पति सोई",
"गिरधर बिन मै कैसे जीवूं माई"।

मीरा लौकिक विवाह केखिलाफ है परन्तु सामत्री कुल की ऊँची मानमर्यादा में मीरा के स्वर दबकर रह जाते है। मीरा को समझा–बुझा मीरा का विवाह राणा राजा भौजराज के साथ सम्पन्न हो जाता है। मीरा इस विवाह को हृदय से स्वीकार नहीं कर पाती है।

"ऐसोंवर को क्या करूँ, जो जीवै और मर जावे।
वर वरण्यो रघुनाथ को, म्हारो चुडलोअमर हो जावे।"

वह अजर–अमर अलौकिक कृ ण को वरा है। मीरा का सर्वस्व कृ ण है। कृ णमय मीरा का स्वच्छंद मन राजकुल की मर्यादाओं में अट नही पाता वह साज श्रृंगार को त्याग देती है –

"गहणो गोठी राणा, हमसब त्यागी, त्यागी करी चुडो।
राणा तु क्या जाने मेरे घटकी, गहनों–गाठ्यो। तज मै तो पहले नरगी।"

माँस सेवन का विद्रोह, विद्रोही तेवर, नववधु के कर्तव्यों से विमुख हो कृ ण आराधना दिन रात करना नाचता–गाता साधु संतो के साथ रहना भजन कीर्तन करता घुंघरू बाँध नाचता सभी आचरण सामंती प्रथा के मर्यादा–प्रति ठा के विरूध्द थे। ससुराल के प्रतिबंधों, बर्ननाओं, सास–ननंद यातना के प्रति कहते हैं।

सासरियों दुखघणो रे, सासु नण्द सतावे।
देवर जेठ, कुदुम कबीलो, नित उठभ राड चलावें।

मीरा के पति की मृत्यु के पश्चात सती होने और वैधव्य के नियमों के पालन के इन्कार पर मीरा पर राजपूताने के अत्याचार बढ़ते गए कि राणा ने मीरा को मारने के लिए कई कोशिशें भी की। परिवार, समाज दोनों तरफ से अत्याचार बढ़े पर मीरा हारी नहीं। वे राजसत्ता के सीधी चुनौती देते हुए कहती है।

'सिसोद्योराणे म्हारा काई करसी',
'राणा थारे देस में साथ नहीं
लोग बसै सब कुडो'
"राणा म्हाणे या बदनामी लागे मीठी",
"राणा थे जहर दियो में जागी"।
"कोई निदो कोई बिन्दो, म्हे तो हरि गुण गाल्या।"

मीरा अकेली नारी होकर प्रबल राजसत्ता को अदम्य साहस के साथ चुनौती देती हैं जो मृत्यु को आमंत्रण देने से कम नहीं था वह भी ५०० व ि पूर्व। मीरा के समस्त काव्य में मीरा के साहस, निर्भयता एवं संघ ि के चिन्ह मौजूद हैं।

यातनाएं एवं परेशानी बढ़ने पर सामान्य नारी की तरह वे पीहर को पुकारती है 'म्हारा बाबा सा ने कहियो, म्हाने वेगा लेवा आये।' वे अन्य जगह कहती है। 'माता पिता कुटुम्ब कबीला' सब मतलब के गरजी, अपना नहीं कोई। लोकनिंदा से परेशान मीरा मुखर हो कहती हैं –

'मीरा गिरधर हाथ बिकानी लोग कह बिगरी'
लोग कहे मीरा भई बावरी। सास कहे कुलनासी।,
कडवा बोल लोकजग बोल्या, करल्या म्हारी हांसी।'

मीरा के संपूर्ण काव्य को मात्र भक्तिकाव्य कहना उचित नही होगा, मीरा का काव्य आज भी गंभीर विमर्श की मांग करता है मीरा न मानवी प्रचलित हर प्रतिकूल मान्यता को तोडकर एक पुरू ा प्रधान समाजाने अपनी अस्मिता को स्थापित किया है। मीरा के काव्य में चेतनामय स्त्री के विद्रोह का स्वर भी है। वे मां से कहती है – "माई मै तो गोविन्द लोव्हो मोल, लियो बजता ढोल"

नि क ि:

कृ णभक्ति में डूबी मीरा समाज परिवार से विद्रोह कर अपनी भक्ति में लीन रूढी, परम्परा, साज–श्रृंगार राजसी वस्त्र का त्याग करती हैं। सबका डॅट कर सामना करती है। वह अपनी स्वतंत्रता नहीं खोती माया मोह से रिक्त भक्ति में डूबी कृ ण ही उनका सब कुछ है। कुल मर्यादा, मान प्रति ठा के बंध्वन तोडती स्त्री–पुरू ा कार्य विभाजित की सीमा को तोडती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 3, March 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मीरा का काव्य कृ ण प्रेम की एकनि ठ निर्मल भक्तिका प्रतीक है। वह कहती है प्रेम हर भय से मुक्त होता है। ५०० व र्ा पूर्व राजसत्ता के सामने न झूकना हार न मानना अपनी स्वतंत्रता को न खोना पुरू ाप्रधान सत्ता से लोहा लेना एवं ५०० व र्ा पहले उत्तर भारत में तत्कालीन समाज में नारी विरोध मान्यताओं के विरूध्द प्रतिकार एवं के स्वर छेड़े। इसीलिए ५०० व र्ा की पुरानी युवा मीरा आधुनिक स्त्री विमर्श की एक बुनियादी कड़ी के रूप में उभरती हैं।

संदर्भग्रंथ :–

१) भारतीय परम्परा की नारी छवि – गोविंदप्रसाद पांडे

२) मीरा के काव्यसाधनाका मर्म – विद्यानिवास मिश्र

३) स्त्री–विमर्श एवं मीरा–संगीत र्मा, प्रतिभाजेन

४) मीराबाई की पदावली

५) मीरा मुक्तावली – स्वामी नरोत्तम

६) मीराबाई की संपूर्ण पदावली – रामकुमार र्मा, सुजीतकुमार र्मा